• ऊर्जा...

धनु संक्रांति

धनु संक्रांति हिन्दू धर्म में बहुत ही शुभ और फलदायी समय माना जाता है। पंचांग के अनुसार साल 2025 में यह पवित्र अवसर 16 दिसंबर को पड़ रहा है। इस दिन सूर्य देव धनु राशि में प्रवेश करते हैं, जिससे पृथ्वी पर प्रकाश, उर्जा और सकारात्मकता का प्रवाह होता है। प्राचीन मान्यताओं के अनुसार इस समय घर में दीपक जलाना बहुत ही शुभ माना गया है। दीपक की लौ नकारात्मक ऊर्जा को दूर करती है और वातावरण में सात्विकता बढ़ाती है। साथ ही सूर्य देव के मंत्रों का जाप करने से मानसिक शांति मिलती है, साधना का फल कई गुना बढ़ता है और जीवन में खुशहाली आती है।

धनु संक्रांति पर दीपक जलाते समय घर की दिशा का विशेष महत्व होता है। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार इस दिन सूर्य देव की दिशा अर्थात पूर्व में दीपक जलाना अत्यंत शुभ माना गया है। पूर्व दिशा से प्रकाश और सकारात्मक उर्जा का प्रवाह होता है, जो मन को हल्का करता है और घर में खुशहाली लाता है। इसके अलावा घर के पूजा स्थान में दीपक जलाना, खासकर सूर्योदय के समय, साधना और ध्यान के लिए लाभकारी माना गया है। दीपक में घी या तेल का प्रयोग करना शुभ होता है, और दीपक की लौ निरंतर जलती रहनी चाहिए।

धनु संक्रांति पर दीपक जलाने के बाद सूर्य देव के मंत्र का जाप करना अत्यंत फलदायी होता है। सबसे लोकप्रिय मंत्र है ऊं सूर्याय नमः। इस मंत्र का उच्चारण ध्यानपूर्वक और निश्चित संख्या में करने से मन स्थिर होता है, मानसिक तनाव कम होता है और आत्मविश्वास बढ़ता है। कुछ ग्रंथों में सूर्य देव के साथ भगवान विष्णु के मंत्रों का जाप करने की भी सलाह दी गई है, जैसे ऊं नमो भगवते वासुदेवाय। सुबह के समय इस मंत्र जाप करने से दिनभर में सकारात्मक ऊर्जा बनी रहती है और जीवन में सफलता के अवसर बढ़ते हैं।

धनु संक्रांति पर दीपक और मंत्र के साथ घर की साफ-सफाई करना भी आवश्यक माना गया है। पूजा स्थान को झाड़कर, स्वच्छ करके दीपक जलाने से वातावरण में सात्विक ऊर्जा बढ़ती है। इसके अलावा लाल फूल, अक्षत और थोड़ा गुड़ दीपक या अर्घ्य में डालने से शुभ फल प्राप्त होते हैं। इस दिन की गई साधना और मंत्र जाप जीवन में मानसिक संतुलन, पारिवारिक शांति और आध्यात्मिक उन्नति लाने वाला माना गया है। धनु संक्रांति पर सही दिशा में दीपक जलाना और मंत्र जाप करना न केवल धार्मिक रूप से लाभकारी है, बल्कि यह घर में सुख, समृद्धि और सकारात्मक उर्जा लाने का प्रभावशाली तरीका भी है।

• ज्योतिष...

खरमास

पंचांग के अनुसार, जब सूर्य धनु राशि में प्रवेश करते हैं, तो उस पूरे एक महीने की अवधि को खरमास या मलमास कहा जाता है। साल 2025 में खरमास 16 दिसंबर 2025 (मंगलवार) से शुरू होकर 15 जनवरी 2026 तक रहेगा। सूर्य के मकर राशि में प्रवेश करते ही यह समाप्त हो जाएगा। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार, सूर्य को सभी ग्रहों के स्वामी, आत्मा और ऊर्जा का कारक माना जाता है।

बृहस्पति (गुरु) की राशि धनु में जब सूर्य प्रवेश करते हैं, तो उनकी ऊर्जा 'खर' (गधे) के समान धीमी हो जाती है। इसे गुरु-सूर्य की युति का 'निर्बल' समय माना जाता है। इसी कारण, इस पूरे माह में मांगलिक कार्य जैसे विवाह, मुंडन, गृह प्रवेश, और नए व्यापार की शुरुआत आदि वर्जित माने गए हैं। लेकिन क्या इस दौरान बाकी चीजों की खरीदारी की जा सकती है।

मांगलिक कार्य : ज्योतिष में मांगलिक कार्य उन्हें माना जाता है, जिनका सीधा संबंध जीवन के बड़े संस्कारों, लक्ष्यों या नए जीवन की शुरुआत से होता है (जैसे विवाह या गृह प्रवेश)।

वस्त्र खरीद : नया वस्त्र या कोई भी वस्तु खरीदना एक नियमित खरीदारी है, न कि कोई धार्मिक संस्कार या मांगलिक कार्य। यह सामान्य जीवनचर्या का हिस्सा है। इसलिए, नए कपड़े खरीदने पर खरमास का कोई सीधा प्रतिबंध नहीं होता है।

सामान्य खरीदारी : नया वस्त्र खरीदना, दैनिक उपयोग की वस्तुएं खरीदना या घर का कोई छोटा-मोटा सामान खरीदना मांगलिक कार्य की परिभाषा में नहीं आता है। इसलिए आप बिना किसी संकोच के यह खरीदारी कर सकते हैं।

ग्रहों का प्रभाव : नए वस्त्र खरीदने से जुड़े किसी भी ग्रह (जैसे शुक्र या बुध) की स्थिति पर खरमास का नकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ता है, खासकर जब आप उन्हें पहनने का इरादा रखते हैं।

शुभ भावना : यदि आप कोई वस्त्र किसी धार्मिक यात्रा या उत्सव के लिए खरीद रहे हैं (जिसे खरमास में किया जा सकता है), तो यह और भी शुभ माना जाता है।

हालांकि नए कपड़े खरीदना शुभ है, लेकिन यदि आप कोई बहुत बड़ी, कीमती, या निवेश से जुड़ी खरीदारी कर रहे हैं (जैसे लाखों का सोना, वाहन या घर) और अगर आप उसे कुछ दिन के लिए टाल सकते हैं, तो मकर संक्रांति के बाद ही करना अधिक फलदायी हो सकता है. पर कपड़े खरीदना इस श्रेणी में नहीं आता. इसलिए खरमास में आपको केवल उन बड़े संस्कारों से बचना चाहिए, जो आपके जीवन में कोई स्थायी और बड़ा बदलाव लाते हैं।

भारत के सबसे प्रसिद्ध सूर्य मंदिर

सूर्य ग्रह को ज्योतिष में विशेष स्थान प्राप्त है। ग्रहों के राजा सूर्यदेव को आयु, रूप, आरोग्य और ऐश्वर्य देने वाला माना गया है। इसके साथ ही यह व्यक्तित्व, अधिकार, सामान्य स्वास्थ्य, सरकारी नौकरी, राजनीतिक पद आदि के प्रतीक हैं।

ऐसे में अगर किसी व्यक्ति की कुंडली में सूर्य अशुभ स्थिति में हों तो उसके मान-सम्मान और प्रतिष्ठा की हानि का दंश झेलना पड़ता है...

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार, ग्रहों में सूर्य को राजा की पदवी प्रदान की गई है. सूर्य ग्रह की शुभता जिस भी जातक की कुंडली में हो, वह नेतृत्व करने की क्षमता रखता है। ज्योतिष के अनुसार सूर्य आत्मा एवं पिता का प्रतिनिधित्व करता है। वैदिक ज्योतिष के अनुसार सूर्य को देवता होने के साथ-साथ ग्रह भी माना गया है। प्राचीन ग्रंथों के अनुसार हिंदू धर्म में पंच देवता हैं, जिनमें गणेश जी, शिव जी, विष्णु जी, मां दुर्गा के साथ-साथ सूर्यदेव शामिल हैं। ऐसे में सूर्य ग्रह को ज्योतिष में विशेष स्थान प्राप्त है। ग्रहों के राजा सूर्यदेव को आयु, रूप, आरोग्य और ऐश्वर्य देने वाला माना गया है। इसके साथ ही यह व्यक्तित्व, अधिकार, सामान्य स्वास्थ्य, सरकारी नौकरी, राजनीतिक पद आदि के प्रतीक हैं. ऐसे में अगर किसी व्यक्ति की कुंडली में सूर्य अशुभ स्थिति में हों तो उसके मान-सम्मान और प्रतिष्ठा की हानि का दंश झेलना पड़ता है।

● **सूर्य मंदिर, मोढ़ेरा**-ये मंदिर गुजरात के मोढ़ेरा में स्थित है। यह मंदिर अहमदाबाद से लगभग 100 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इस मंदिर का निर्माण सम्राट भीमदेव सोलंकी प्रथम ने करवाया था। यहां पर इसके संबंध में एक शिलालेख भी मिलता है। वे सूर्य को कुलदेवता के रूप में पूजते थे। मंदिर के गर्भगृह के अंदर की लंबाई 51 फुट 9 इंच तथा चौड़ाई 25 फुट 8 इंच है। मंदिर के सभामंडप में कुल 52 स्तंभ हैं। इस मंदिर का निर्माण कुछ इस तरह किया गया था कि जिसमें सूर्योदय होने पर सूर्य की पहली किरण मंदिर के गर्भगृह को रोशन करे। सभामंडप के आगे एक विशाल कुंड स्थित है जिसे लोग सूर्यकुंड या रामकुंड के नाम से जानते हैं।

● **कोणार्क सूर्य मंदिर**-ओडिशा राज्य मे पुरी के निकट कोणार्क का सूर्य मंदिर स्थित है। कोणार्क सूर्य मंदिर सूर्य देवता को समर्पित है। रथ के आकार में बनाया गया यह मंदिर भारत की मध्यकालीन वास्तुकला का अनोखा उदाहरण है। इस सूर्य मंदिर का निर्माण राजा नरसिंहदेव ने 13वीं शताब्दी में करवाया था। हिन्दू मान्यता के अनुसार सूर्य देवता के रथ में बारह जोड़ी पहिए हैं। रथ को खींचने के लिए उसमें 7 घोड़े जुते हुए हैं। ऐसा शानदार मंदिर विश्व में शायद ही कहीं हो। यहां की सूर्य प्रतिमा पुरी के जगन्नाथ मंदिर में सुरक्षित रखी गई है। सूर्य मंदिर समय की गति को भी दर्शाता है, जिसे सूर्य देवता नियंत्रित करते हैं। पूर्व दिशा की ओर जुते हुए मंदिर के 7 घोड़े सप्ताह के सातों दिनों के प्रतीक हैं।

● **मार्तंड सूर्य मंदिर**-मंदिर जम्मू-कश्मीर राज्य के पहलगाम से निकट अनंतनाग में स्थित है। इस मंदिर का निर्माण मध्यकालीन युग में 7वीं से 8वीं शताब्दी के दौरान हुआ था। सूर्य राजवंश के राजा ललितादित्य ने इस मंदिर का निर्माण एक छोटे से शहर अनंतनाग के पास एक पठार के ऊपर किया था। इसमें 84 स्तंभ हैं जो नियमित अंतराल पर रखे गए हैं। मंदिर की राजसी वास्तुकला इसे अलग बनाती है। बर्फ से ढंके हुए पहाड़ों की पृष्ठभूमि के साथ केंद्र में यह मंदिर करिश्मा ही कहा जाएगा। इस मंदिर से कश्मीर घाटी का मनोरम दृश्य भी देखा जा सकता है। कारकूट वंश के राजा हर्षवर्धन ने ही 200 साल तक सेंट्रल एशिया सहित अरब देशों में राज किया था।

● **बेलाउर सूर्य मंदिर**-इस मंदिर का निर्माण राजा सूबा ने करवाया था बाद मे बेलाउर गांव में कुल 52 पोखरा तालाब का निर्माण कराने वाले राजा सूबा को राजा बावन सूब के नाम से पुकारा जाने लगा। बिहार के भोजपुर जिले के बेलाउर गांव के पश्चिमी एवं दक्षिणी छोर पर अवस्थित वेलाउर सूर्य मंदिर काफी प्राचीन है। राजा द्वारा बनवाए 52 पोखरो मे एक पोखर के मध्य में यह सूर्य मन्दिर स्थित है। यहां छठ महापर्व के दौरान प्रति वर्ष एक लाख से अधिक श्रद्धालु आते है जिनमे उत्तर प्रदेश एवं मध्य प्रदेश के श्रद्धालु भी होते हैं। ऐसा कहा जाता है कि सच्चे मन से इस स्थान पर छठ व्रत करने वालों की सभी मनोकामनाएं पूरी होती है तथा कई रोग-व्याधियों से भी मुक्ति मिलती है।

● **झालरापाटन सूर्य मंदिर**-झालावाड़ का दूसरा जुड़वा शहर झालरापाटन को सिटी ऑफ वेल्स यानी घाटियों का शहर भी कहा जाता है। शहर में मध्य स्थित सूर्य मंदिर झालरापाटन का प्रमुख दर्शनीय स्थल है। वास्तुकला की दृष्टि से भी यह मंदिर अहम है। इसका निर्माण दसवीं शताब्दी में मालवा के परमार वंशीय राजाओं ने करवाया था। ■ पं. नित्यानंद

• वास्तु...

भोजन

वास्तु शास्त्र के अनुसार, किसी भी व्यक्ति को घर की चौखट पर बैठकर पर भोजन भूलकर भी नहीं करना चाहिए। मान्यता है कि जो व्यक्ति घर की चौखट पर बैठकर भोजन करता है, उसके घर में नकारात्मक ऊर्जा प्रवेश कर जाती है। धार्मिक मान्यता के अनुसार, घर की चौखट पर देवी-देवता वास करते हैं। इसलिए इस जगह पर बैठकर भोजन करने से बचें। वास्तु शास्त्र में भोजन करते समय दिशा का विशेष ध्यान रखने के लिए कहा गया है। वास्तु शास्त्र के अनुसार, पूर्व दिशा की तरफ मुंह करके भोजन करना चाहिए। इस दिशा में भोजन करने से घर में सकारात्मक ऊर्जा का प्रवाह बढ़ता है। भोजन को भगवान का प्रसाद का माना जाता है, इसलिए भोजन करते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि बर्तन टूटा न हो। क्योंकि वास्तु के अनुसार, टूटे बर्तन में भोजन नहीं करना चाहिए। टूटे बर्तन में भोजन करने से उसका अपमान होता है। ऐसा करने वाला व्यक्ति जीवन में दुर्भाग्य का सामना करता है और अशुभ परिणाम मिलते हैं।

• माता लक्ष्मी...

सोने को माता लक्ष्मी का प्रतीक बताया गया है। कहा जाता है कि सोने का सम्मान उसी तरह करना चाहिए, जैसे माता लक्ष्मी का किया जाता है। ऐसा करने पर घर में धन का आगमन बना रहता है। सोना सुख-समृद्धि का भी प्रतीक माना जाता है। पैरों में सोना पहनने से माता लक्ष्मी नाराज हो जाती हैं। इस कराण धन हानि होती है। जीवन आर्थिक परेशानियों से घिर जाता है, इसलिए सोना पैरों में पहनने से मना किया जाता है।

स्वामी/प्रकाशक/मुद्रक/संपादकः अनल पत्रवाल द्वारा गांव व डाकघर-रजियाणा, तहसील-नगरोटा बगवां, जिला-कांगड़ा-176056, हिमाचल प्रदेश से प्रकाशित एवं एजीएस पब्लिकेशन्स, डी-67, सेक्टर-6, नोएडा-201301, गौत्तम बुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश से मुद्रित